प्रस्तावना

मनुष्य के आत्मिक जीवन एवं भविष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा की सज़्पूर्णता ''सनातन मंशा'' के आकर्षक शज़्दों में पाई जाती है। नये नियम में केवल इफिसियों 3:11 में ही इन शज़्दों का इस प्रकार जोड़ मिलता है। व्यापक अर्थ में इन दो शज़्दों में हर युग के लिए परमेश्वर की सृष्टि के लिए उसके छुटकारे की मंशा मिलती है। व्यापक अर्थ में, इन शज़्दों में परमेश्वर द्वारा अपने सृजे गए संसार के सदा के लिए छुटकारे की मंशा का संदेश मिलता है। इन शज़्दों में परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र को क्रूस पर चढ़ने के लिए भेजने से पूरा किए जाने वाले उद्देश्य के महत्व का पता चलता है।

यीशु द्वारा पूरा किए जाने वाले परमेश्वर के उद्देश्य की तुलना किसी अन्य करुणामय महत्वाकांक्षा से नहीं की जा सकती। इस लज़्बी सोच वाली योजना के क्रियान्वयन के लिए ईश्वरीय उद्देश्य की उज़्मीद भी होनी थी। छुटकारे के लिए परमेश्वर की योजना को सामने लाना वह सुनहरी धागा है जो पुराने नियम को एक करता है। पिछले युगों में, परमेश्वर ने संसार को ''समय पूरा'' होने पर यीशु के द्वारा उद्धार की योजना ''लाने'' के लिए बड़ी सावधानी तथा धीरज से तैयार किया (गलतियों 4:4)।

क्रूस तथा कलीसिया को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। क्रूस से कलीसिया का सृजन होता है और इसी से कलीसिया बनती है और कलीसिया संसार में क्रूस का संदेश पहुंचाती है (2 कुरिन्थियों 5:18, 19)। जब पापी लोग क्रूस से मिलने वाले लाभों को ग्रहण करते हैं तो उनसे कलीसिया बनती है। इसीलिए पौलुस ने कहा कि मसीह ने कलीसिया को ''अपने लहू से खरीदा'' है (प्रेरितों 20:28)। क्रूस के द्वारा, वह लोगों को हर प्रकार के व्यवस्थारहित कामों से छुड़ाकर, उन्हें शुद्ध करता, उन्हें अपनी सज़्पज़ि बनाता और ''अपनी कलीसिया'' कहता है (मज़ी 16:18; तीतुस 2:14)। कलीसिया मनुष्य का आविष्कार नहीं बल्कि परमेश्वर की मंशा है अर्थात यह मनुष्य के मन की उपज नहीं, परमेश्वर की योजना है।

इस सब के प्रकाश में, संसार के लिए नये नियम की ''कलीसिया'' का अर्थ समझे बिना परमेश्वर के उद्देश्य को समझना कठिन होगा। यह पुस्तक परमेश्वर की सनातन मंशा *के रूप में* ''कलीसिया'' पर नये सिरे से ध्यान दिलाने की एक कोशिश है।

नया नियम न तो मसीह रहित कलीसिया को और न ही कलीसिया रहित मसीह को

दिखाया है अर्थात [illegible] एक ऐसी आत्मिक देह को दिखाया है जिस पर सिर के रूप में मसीह शासन करता है। चाहे कोई भी [illegible] [illegible] हों, चाहे कोई भी [illegible] हों और चाहे कोई भी हो जाते, हमारे लिए [illegible] [illegible] [illegible] से भी बढ़कर [illegible] है। यदि हम इस [illegible] में नाकाम रहते हैं, तो हम न केवल अपने आप में नाकाम होते बल्कि इसके भी [illegible] [illegible] [illegible] कि हम परमेश्वर के संसार में उसके उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाते हैं!

इस पर किसी भी पुस्तक को एक मानवीय [illegible] से [illegible] और [illegible] में [illegible] चाहे [illegible] मसीहियों या कलीसियों का [illegible] रह जाना कोई बड़ी बात नहीं है। शायद आपको इस पुस्तक में अपने [illegible] या उसकी महिमामय कलीसिया के विरुद्ध कोई [illegible] बात लगी हो, उसे मन से न लें। मैं आपसे इस पुस्तक के पीछे की [illegible] [illegible] की कलीसिया को सम्पूर्ण ज्ञान देने की प्राथमिकता देने के लिए जो कि परमेश्वर के मन में है, अर्थात उसे पढ़ने और [illegible] के लिए कहता हूँ।

मैं इस पुस्तक को [illegible] तथा मसीह के काम में एक सहकर्मी की तरह मेरा साथ [illegible] [illegible] [illegible] देने वाली अपनी पत्नी का: [illegible], [illegible] तथा [illegible] के लिए [illegible] [illegible] का: पुस्तक को तैयार करने में अपनी सहायक [illegible] [illegible] का: और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] के अपने सभी सहकर्मियों का जो इस पुस्तक को [illegible] के लिए मेरे सहायक तथा [illegible] रहे, धन्यवादी हूँ।

> [illegible],
>
> समय के आरम्भ से पूर्व आपने उन लोगों के उद्धार के लिए जो आपके पुत्र के द्वारा आपके पास आए हैं, योजना बनाई थी। आपने हमारे छुटकारे की बात हमारे पैदा होने से भी पहले ही सोच ली थी। हमारे उद्धार के लिए आपने जो कुछ भी किया है उसे हम पूरी तरह न तो समझ सकते हैं और न [illegible] आभार व्यक्त कर सकते हैं। आपके प्रेम, अनुग्रह, तथा सनातन [illegible] को [illegible] करने के लिए हमें क्षमा करें। हमें अपने जीवन में आपकी इच्छा पर [illegible] [illegible] की समझ दें। हमें यह समझ दें कि संसार में आपकी इच्छा को [illegible] [illegible]। हमारी धार्मिक [illegible] तथा [illegible] को क्षमा करें। हमें नए सिरे से अपने जीवन को [illegible] हैं, ताकि हम आपकी सनातन [illegible] वाली "कलीसिया" बन सकें। हमारी [illegible] में एक ऐसी [illegible] [illegible] कि हम [illegible] [illegible] विश्वास तथा [illegible] [illegible] में "वह कलीसिया" बनकर [illegible] [illegible] जिसे यीशु ने अपने लहू से मोल लिया है।
>
> मसीह यीशु के नाम में, आमीन।

"अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन॥" (इफिसियों 3:20, 21)।

[illegible]